

# विषय-सूची

क्रमांक	विवरण	पृ० सं०
1	प्रस्तावना	6
2	अध्ययन की पृष्ठभूमि	7-8
3	अध्ययन क्षेत्र की समस्याएं	9-11
4	पूर्व साहित्य अवलोकन	12-15
5	कार्यप्रणाली एवं दृष्टिकोण	16
6	डेटा विश्लेषण	17
7	(गालीपुर) में भीड़ प्रबंधन	18
8	भीड़ प्रबंधन हेतु जनपद में जारी दिशा-निर्देश	19
9	आयोजन स्थलों पर भगदड़ रोकने की पूर्व तैयारी	20-22
10	उपसंहार/निष्कर्ष	23
11	चित्र-सूची	24-25



# प्रस्तावना

प्रस्तुत शोध में गाजीपुर शहर में दुर्गा पूजा के

दौरान होने वाले भीड़ प्रबन्धन का अध्ययन किया गया है। भीड़ प्रबन्धन एक ऐसी योजना है जिसमें लोगों की व्यवस्थित आवाजाही और जमावड़े की व्यवस्थित योजना और निरीक्षण किया जाता है। भीड़ प्रबन्धन के अभाव में अनेक दुर्घटनाएँ घटित होती हैं। अतः भीड़ अथवा भगदड़ जैसी घटनाओं से बचाव हेतु प्रबन्धन आवश्यक है। इसके लिये प्राथमिक रूप से यातायात का प्रबन्धन आवश्यक है।

भीड़ अथवा भगदड़ जैसी आपदाओं से बचने के लिये यातायात प्रबन्धन सुरक्षा के साथ-साथ सड़कों पर यातायात के सुचारु प्रवाह के लिये भी उपयोगी है। यातायात प्रबन्धन सेवा का मुख्य लक्ष्य लोगों की सुरक्षित महसूस कराना है और उन्हें सुरक्षा प्रदान करना है। यातायात जो भीड़ अथवा भगदड़ का कारण बन सकता है इसके लिये विद्वानों द्वारा अनेक सिद्धान्त प्रस्तुत किये गये जिनमें क्रिस्टालर महोदय का परिवहन सिद्धान्त तथा बोरिस कार्नर महोदय का त्रि-चरण यातायात सिद्धान्त महत्वपूर्ण है।



भीड़ प्रबन्धन हेतु सर्वप्रथम यातायात नियंत्रण आवश्यक है। जिसके लिये क्रिस्टालर मर्होदय ने परिवहन सिद्धान्त प्रस्तुत किया जिसे यातायात जाल नेटवर्क भी कहते हैं जो  $K=4$  नेटवर्क पर कार्य करता है। जिसका मुख्य उद्देश्य दो अथवा दो से अधिक केन्द्रीय स्थलों के बीच की दूरी को कम करना है। यह सिद्धान्त क्रिस्टालर ने 1933 में प्रस्तुत किया था।

त्रि-चरण यातायात सिद्धान्त 1996 और 2002 के बीच बोरिस कार्नर द्वारा विकसित यातायात प्रवाह का एक सिद्धान्त है। यह सिद्धान्त मुख्य रूप से यातायात दूबने और राजमार्गों पर परिणामी भीड़भाड़ वाले यातायात की भौतिकी व्याख्या पर केन्द्रित है। कार्नर ने अपने सिद्धान्त में यातायात के तीन चरणों का वर्णन किया है। जबकि यातायात प्रवाह के मौलिक आरेख पर आधारित शास्त्रीय सिद्धान्तों में दो चरण होते हैं — मुक्त प्रवाह और भीड़भाड़ वाला यातायात। कार्नर का सिद्धान्त भीड़भाड़ वाले यातायात को दो अलग-अलग चरणों में विभाजित करता है। समकालिक प्रवाह और व्यापक गतिमान जाम, जिससे चरणों की संख्या तीन हो जाती है —

- (i) मुक्त प्रवाह
- (ii) समकालिक प्रवाह
- (iii) वाइड मूविंग जाम



बढ़ती हुई जनसंख्या को भी ध्यान में रखते हुये भीड़ का प्रबन्धन अति आवश्यक है। भारत विश्व का सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश है। संयुक्त राष्ट्र के अनुमान के अनुसार अप्रैल 2023 के अन्त में 1,425,775,850 की आबादी के साथ भारत दुनिया में सबसे बड़ी आबादी वाली चीन से आगे निकल गया है। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की वार्षिक जनसंख्या वृद्धि दर 1.64% है। भारत में पहली बार समकालिक जनगणना 1881 में हुई थी। 1901 से यह हर दशक के बाद हो रही है। 2011 की जनगणना के अनुसार 2001 की जनगणना की तुलना में भारत में 10 लाख से अधिक जनसंख्या वाले नगरों की संख्या 35 से बढ़कर 53 हो गई। जनसंख्या विस्फोट और तीव्र शहरीकरण के कारण भारतीय नगरों में भीड़ सम्बन्धी दुर्घटनाओं की संभावनाएँ अधिक हुई हैं।

अध्ययन क्षेत्र जनपद गाजीपुर में देश की प्राकृतिक जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्ति में क्रमशः वृद्धि ही रही है। 2001 की जनगणना में 1991 की जनगणना की तुलना में गाजीपुर की जनसंख्या में 25.70 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। 2001 में गाजीपुर की जनसंख्या 3,037,582 थी। 2011 में गाजीपुर की जनसंख्या 3,620,268 थी। 2011 की जनगणना के बाद 2021 की अगली जनगणना स्थगित या रद्द कर दी गई। जिसके कारण वर्तमान समय (2023) में जनसंख्या की सही जानकारी उपलब्ध नहीं है। परन्तु जनसंख्या में क्रमशः वृद्धि ही रही है।



फलस्वरूप बढ़ती जनसंख्या के कारण त्योहारों स्वयं आयोजनों के दौरान सार्वजनिक स्थलों पर बड़ी संख्या में भीड़ एकत्र होती है। भीड़ के कारण होने वाले अपेक्षित और अप्रत्याशित घटनाओं का प्रबन्धन आवश्यक है।

भीड़ के कारण होने वाले हादसे —

भीड़ नियंत्रण अथवा भीड़ प्रबन्धन के अभाव में विश्व स्तर पर अनेक बड़े हादसे हुये हैं, जो निम्नवत हैं —

- 1) 2 जुलाई 1990 में सऊदी अरब में वार्षिक हज के दौरान 1426 मुस्लिम तीर्थयात्री, मुख्य रूप से रशिया से मक्का से मदीना तक जाने वाली लम्बी पैदल यात्री सुरंग में और उसके आस-पास भगदड़ के कारण मर गये।
- 2) 23 मई 1994 में हज यात्रा पर तीर्थयात्रियों की भीड़ में 270 मुस्लिम तीर्थयात्रियों की मौत हो गई।
- 3) 23 नवम्बर 2010 में कम्बोडिया की राजधानी नौम पेन्ह में एक उत्सव के दौरान हुई भगदड़ में 340 से अधिक लोग मारे गये और सैकड़ों अन्य घायल हो गये।
- 4) 24 सितम्बर 2015 में सऊदी अरब में हज के दौरान कम से कम 2411 मुस्लिम तीर्थयात्रियों की मौत भगदड़ के कारण हो गई।



5) 29 अक्टूबर 2022 में दक्षिण कोरिया के सियोल में हेलोवीन उत्सव के दौरान एक संकरी सड़क पर आगे बढ़ रही एक बड़ी भीड़ द्वारा कुचले जाने से कम से कम 146 लोगों की मौत हो गई और अन्य 150 लोग घायल हो गए।

6) भारत के महाराष्ट्र में मंथरदेवी मन्दिर के पास हिंदू तीर्थयात्रियों में दहशत के कारण 265 लोगों की मौत हो गई।

भारत भीड़ से जुड़े हादसों का तेजी से केन्द्र बनता जा रहा है। एक नये अध्ययन में यह दावा किया गया है। इसमें कहा गया है कि धार्मिक समारोहों में भीड़ से जुड़े हादसे होने की आशंका सबसे ज्यादा रहती है। अतः इस प्रकार की आपदाओं अथवा हादसों से बचने के लिये भीड़ प्रबन्धन अति आवश्यक है।

भीड़ प्रबंधन में उपयोग से पहले स्थान की क्षमताओं का आंकलन शामिल होता है। भीड़ प्रबंधन में अधिभोग के अनुमानित स्तरों का मूल्यांकन, प्रवेश और निकास के साधनों की पर्याप्तता, प्रसंस्करण, प्रक्रियाएँ जैसे टिकट संग्रह, एवं अपेक्षित प्रकार की गतिविधियाँ तथा समूह व्यवहार शामिल है।



# अध्ययन की पृष्ठभूमि

वर्तमान अध्ययन रूपरेखा में दुर्गा पूजा के दौरान 'गाजीपुर शहर' के भीड़ प्रबंधन को ध्यान में रखा गया है। गाजीपुर भारत के उत्तर प्रदेश प्रान्त का एक शहर एवं गाजीपुर जिले का मुख्यालय है। यह गंगा नदी के किनारे स्थित है। यह नगर उत्तर प्रदेश और बिहार की सीमा के बहुत समीप स्थित है। यहां की स्थानीय भाषा भोजपुरी एवं हिन्दी है। यह बनारस से 70 कि०मी० पूर्व में स्थित है।

गाजीपुर को लहुरी काशी भी कहा जाता है। गाजीपुर जिले के बहुत से युवा भारतीय सेना से जुड़े हुए हैं इसलिये गाजीपुर जिले को वीरों की धरती भी कहा जाता है। गाजीपुर अंग्रेजी द्वारा 1820 में स्थापित रशिया का सबसे बड़ा अफीम के कारखाने के लिये प्रख्यात है।

गाजीपुर जिला अपने अतीत से ही गंगा - जमुनी संस्कृति का प्रमुख केन्द्र है इसलिये इस जिले में सभी धर्मों के त्यौहार मनाये जाते हैं। यह जिला ग्रामीण संस्कृति का स्पर्श भी दर्शाता है इसलिये स्थानीय स्तर पर कई त्यौहार और मेले पूरे उत्साह के साथ और खुशी के साथ मनाए जाते हैं।

गाजीपुर में लगभग 32 छोटे-बड़े मेले प्रतिवर्ष लगते हैं। अधिकांश त्यौहारों का उत्सव स्थानीय मेलों के साथ भी मनाया जाता है। इन सभी बड़े-छोटे आयोजनों में बड़ी संख्या में भीड़-सकप्रित होती है।





BARACHAWAR

BHAWARKOL

KASIMABAD

MUHAMMADABAD

REVTIIPUR

BHADAURA

MARDAH

VIRNO

GHAZIPUR

ZAMANIA

JAKHANIA

MANIHARI

KARANDA

SADAT

DEOKALI

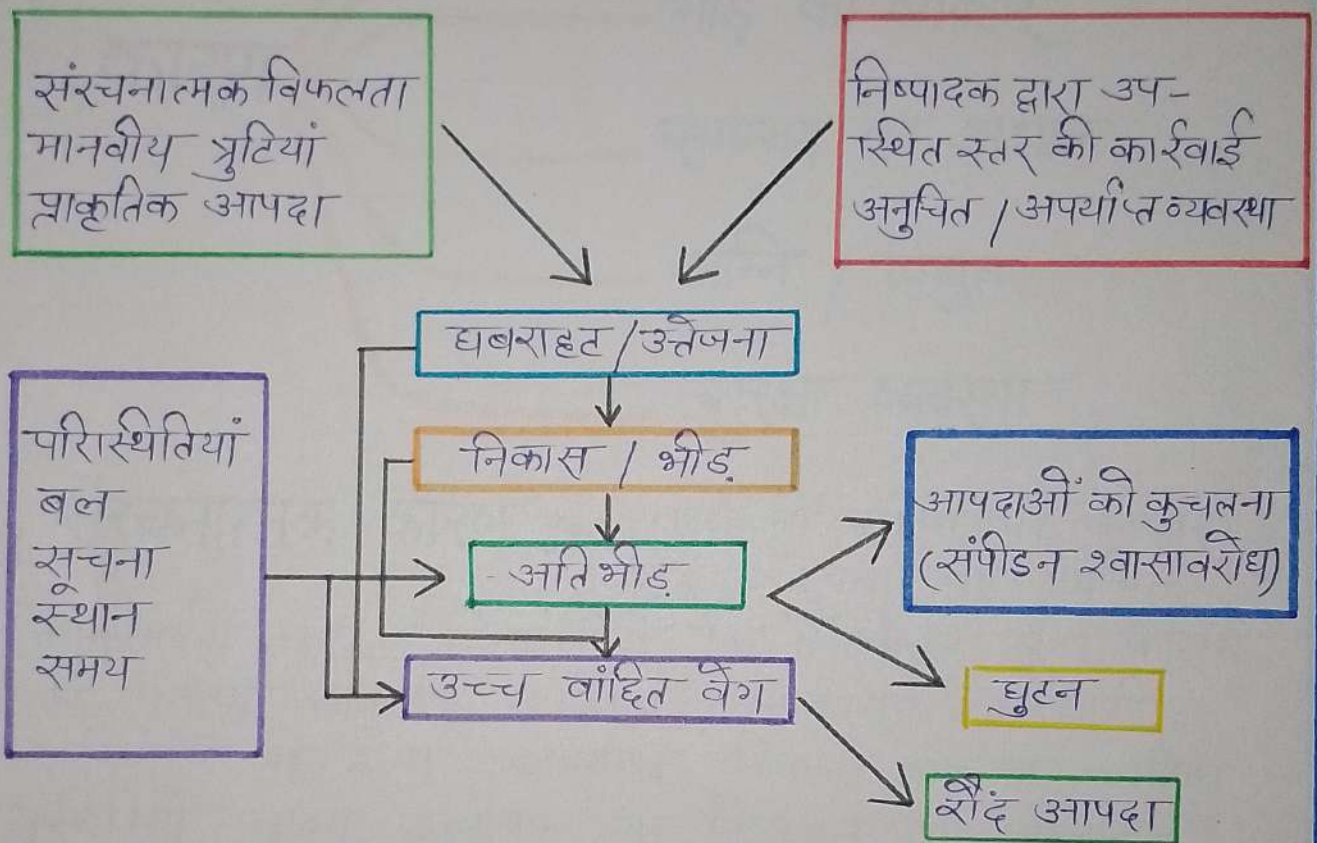
SAIDPUR



# अध्ययन क्षेत्र की समस्याएं

अध्ययन क्षेत्र गाजीपुर में पूर्व के दौरान भीड़ प्रबन्धन के अभाव में होने वाली संभावित आपदाएं

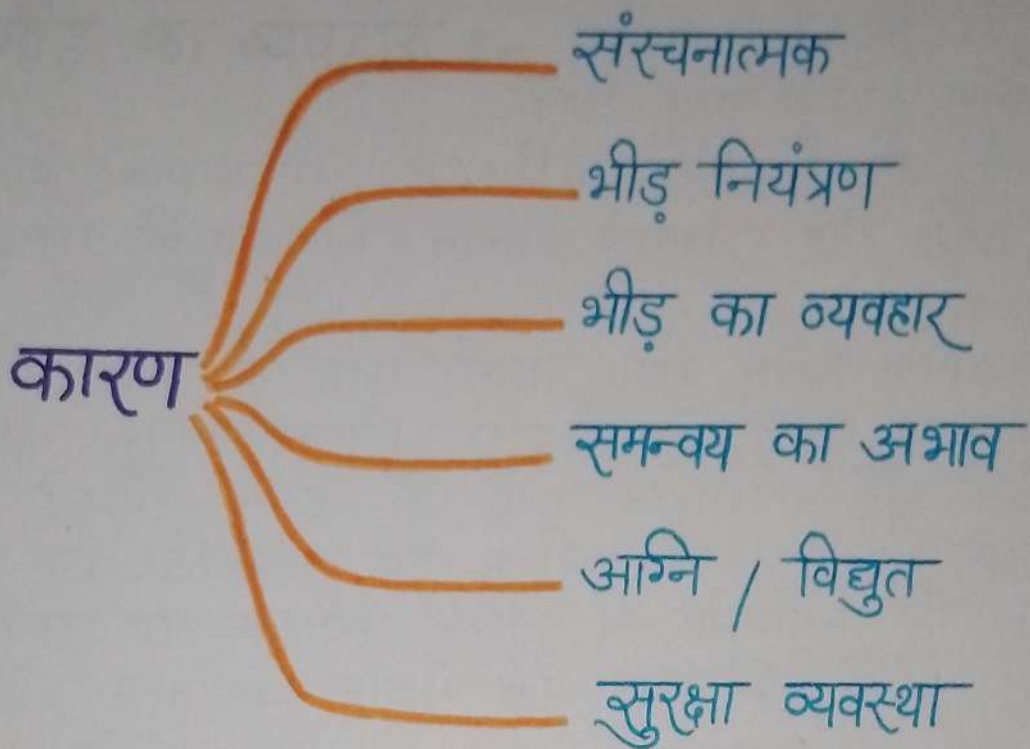
## भीड़ आपदा प्रक्रिया



भीड़ की आपदाओं के कारणों की सूची पर एक नज़र डालने से पता चलता है कि उनमें से अधिकांश मानव निर्मित हैं जिन्हें सक्रिय और समग्र योजना और त्रुटिहीन कार्यान्वयन से पूरी तरह से रोका जा सकता है। जनपद में दशहरे के दौरान संभावित कारणों की उपरोक्त सूची के विरुद्ध सामूहिक जमावड़े वाले स्थानों पर की गई व्यवस्था का गहन मूल्यांकन करने से आपदा की संभावना मार्कोय रूप से कम हुई।



NDMA ने भीड़ आपदाओं के लिये उत्तरदायी प्रमुख  
दो कारणों को रेखांकित किया है ।



(1) संरचनात्मक कारण :- कार्यक्रमों स्थलों पर आधार-  
भूत संरचना या समुचित  
व्यवस्थाओं का न होना जैसे कि बैरिकेड्स एवं फेसिंग  
की पर्याप्त व्यवस्था न होना, आवश्यक अस्थायी  
संरचनाएँ न होना, अपर्याप्त विकास व्यवस्था, जटिल  
स्थितियों वाला इलाका या फिसलन या कीचड़  
युक्त सड़के आदि ।

(2) भीड़ नियंत्रण :- कार्यक्रम स्थल पर स्थल की  
क्षमता से अधिक भीड़ इकट्ठा  
कर लेना । आयोजकों का खराब प्रबंधन, भीड़  
स्थल पर पर्याप्त आपातकालीन विकास व्यवस्था का  
ना होना, भीड़ स्थल पर आपातकालीन समस्याओं



के साथ प्रभावी रूप से निपटने के लिये उपलब्ध सिस्टम या कार्य प्रणालियों का ना होना ।

(3) भीड़ का व्यवहार :- अनेक घटनाओं में यह देखा गया है कि घटना इसलिये व्यापक रूप से घटित होती है कि भीड़ के द्वारा किया जाने वाला व्यवहार भी उचित नहीं होता है ।

जिसमें भीड़ के द्वारा किया जाने वाला व्यवहार से संबंधित अनेक अनुचित मुद्दों को देखा जा सकता है । जिसमें लोगों के द्वारा अनियंत्रित गैर जिम्मेदार और उग्र प्रतिक्रिया भी शामिल है । जिससे यह प्रतिक्रिया आपातकालीन स्थिति में परिवर्तित हो जाती है और एक बड़े हादसे को जन्म देती है ।

(4) हित धारकों के बीच समन्वय का अभाव :- समारोह का आयोजन करने वाली संस्थानों व संबंधित अधिकारियों के मध्य समन्वय का अभाव भी भीड़ आपदाओं को आमंत्रित करता है ।

(5) अग्नि या विद्युत :- अग्नि या विद्युत से संबंधित कार्यों में जैसे की दुकानों में खाना पकाने या अन्य क्रियाकलापों में उपयोग होने वाली ज्वलनशील सामग्री के उपयोग में लापरवाही से भी अनेक ऐसी घटनाएँ घटित होती हैं । आयोजन स्थलों पर आग बुझाने वाली व्यवस्था का ना होना ।



# पूर्व साहित्य अवलोकन

वैज्ञानिकों ने सन् 1900 के बाद से अब तक भूकम्प या भूडंभी के कारण हुई घटनाओं का एक डेटा-बेस तैयार किया है। वे उम्मीद कर रहे हैं कि इस डेटाबेस के आधार पर दुनियाभर में भूडंभी के कारण होने वाली मौतों को रोकने के लिये समुचित उपाय उठाए जा सकेंगे।

इस डेटाबेस में 1900 से 2019 के बीच हुई 281 उन घटनाओं को शामिल किया गया है जिनमें या तो कम से कम एक व्यक्ति की मौत हुई या दस से ज्यादा लोग घायल हुए। आंकड़े दिखाते हैं कि भारत और पश्चिमी अफ्रीका भूकम्प की दुर्घटनाओं के सबसे बड़े केन्द्र बनते जा रहे हैं। पिछले तीन दशक में इस तरह की घटनाएँ घातक होने की संभावना लगातार बढ़ी है। अन्य खतरनाक इलाकों में दक्षिण-पूर्व एशिया और मध्य-पूर्व हैं।

शोधकर्ता कहते हैं कि पिछले बीस साल में भूडंभी के कारण होने वाली दुर्घटनाओं की संख्या बढ़ रही है। 1990 से 1999 के बीच हर साल औसतन तीन रूसी घटनाएँ होती थीं। जो 2010 से 2019 के बीच बढ़कर 12 प्रतिवर्ष हो गईं।

जापान की टोक्यो यूनिवर्सिटी के रूसोरीस्ट प्रोफेसर क्लाउडियो फेलिचियानी और ऑस्ट्रेलिया की न्यू साउथ वेल्स यूनिवर्सिटी के डॉ॰ मैलाद हागानी का यह शोध सैफ्टी साइंस जर्नल में प्रकाशित



हुआ है। वे कहते हैं कि सुरक्षा उपायों को मजबूत करने के लिये ऐसा डेयूबेस होना और उसका विश्लेषण करना जरूरी है ताकि भविष्य में ऐसी दुर्घटनाओं को रोका जा सके।

डॉ. मिलाद हागानी ने कहा "पिछले 20 साल ही में भगदड़ आदि की घटनाओं में 8000 से ज्यादा लोगों की जान गई है और 15000 से ज्यादा लोग घायल हुए हैं। समय के साथ-साथ खेलों की घटनाओं के दौरान दुर्घटनाएँ कम हुई हैं और धार्मिक आयोजनों में ऐसी घटनाएँ बढ़ी हैं। हमारे पास ऐसे पुख्ता संकेत हैं कि बीते 30 साल में खेल आयोजनों के दौरान अपनाये गये अतिरिक्त सुरक्षा को मजबूत किया है।"

शोध के मुताबिक देशों की आय के स्तर और दुर्घटनाओं में सीधा सम्बन्ध दिखाई दिया है। शोधकर्ता कहते हैं कि कम या मध्यम आय वाले देशों में दुर्घटनाएँ ज्यादा हुई हैं। डॉ. हागानी ने बताया भारत और कुछ कम हद तक पश्चिमी अफ्रीका भीड़ वाले इलाकों के केंद्र नजर आते हैं। ये तेजी से विकसित हो रहे इलाके हैं और इनकी आबादी भी बढ़ रही है। गांवों से शहरों की ओर पलायन को संभालने के लिये ढांचागत सुविधारण तैयार नहीं हैं।

डॉ. हागानी ने कहा कि उत्तर भारत खासतौर पर अत्यधिक घनी आबादी वाला इलाका है जहाँ धार्मिक परम्पराओं का बहुत प्रभाव है और लोग कुछ समय के लिये छोटी जगहों पर बड़ी संख्या में जमा होते हैं।



यह शोध दिखाता है कि 1970 के दशक में भगदड़ के कारण जितने भी हादसे हुये उनमें से लगभग सभी खेल आयोजनों के दौरान हुये। लेकिन 1973 में कथित 'ग्रीन गार्ड' के प्रकाशन की शुरुआत के बाद से इन हादसों में कमी शुरू हो गई। यह मार्गदर्शिका खेल आयोजनों के लिये सुरक्षा प्रबन्धन के बारे में दिशा-निर्देश डिजाइन और योजना के बारे में जानकारीयां प्रकाशित करती है।

अपने शोध में शोधकर्ता लिखते हैं, "यूके में भीड़ के कारण हादसे आम हुआ करते थे। हम उम्मीद करते हैं कि यूके में सीखे गये सबक वैश्विक स्तर पर अपनाये जा सकेंगे। हालांकि हम जानते हैं कि बहुत से देशों के पास ऐसे सुधारों के लिये समुचित धन नहीं है।"

### धार्मिक आयोजनों के खतरे

हालांकि खेल आयोजनों में हादसों की संख्या कम हो रही है, शोधकर्ता कहते हैं कि धार्मिक आयोजन अब ज्यादा खतरनाक होते जा रहे हैं। रूसोसिरुट प्रोफेसर फेलिचियानी ने एक लेख में बताया कि खेल आयोजनों जैसे सुरक्षा उपायों की धार्मिक आयोजनों में अपनाना आसान नहीं है क्योंकि वहां कोई टिकट नहीं होती और लोगों की संख्या भी तय नहीं होती, जिस कारण भीड़ - प्रबन्धन बेहद मुश्किल हो जाता है।



साल 2000 से 2019 के बीच दुनिया में जितने भी ऐसे हादसे हुए उनमें से लगभग 70 प्रतिशत भारत में हुए और धार्मिक आयोजनों से संबंधित थे। इनमें से बहुत सी दुर्घटनाएँ नदी या पानी के अन्य स्रोत के किनारे हुईं। बड़ी संख्या में पुलों, नदी के किनारों और बस या ट्रेन स्टेशनों आदि पर हुए हैं।

डॉ० फेलिचियानी कहते हैं, "मेरे ख्याल भारत के आंकड़े देखकर समस्या विनीय संसाधनों की नज़र आती है। उन्हें पता है कि घातक हादसे हो रहे हैं और उन्हें पता है कि कुछ किया जाना चाहिये लेकिन शायद उनके पास वैसे संसाधन या तकनीक उपलब्ध नहीं है, जैसी धनी देशों के पास है।



भीड़ जो कि पर्व के दौरान स्फुटित होती है उसके प्रबन्धन के लिये गाजीपुर शहर में दुर्गा पूजा आयोजन को एक कैस स्टडी के रूप में चुना गया है। इसके लिये वाई स्तर पर विस्तृत विश्लेषण किया गया है। अध्ययन भीड़ प्रबंधन के स्थानिक पैटर्न के आंकलन पर केन्द्रित है। इस उद्देश्य के लिये विभिन्न भीड़ प्रबंधन और भीड़ नियंत्रण का निदान और मूल्यांकन किया गया है। इन अध्ययनों के परिणामों के आधार पर दुर्गा पूजा के दौरान गाजीपुर में भीड़ प्रबंधन के लिये बुनियादी रणनीतियों को उजागर करने का प्रयास किया गया है। इस आयाम में भविष्य की वृद्धि और भीड़ प्रबंधन और नियंत्रण आवश्यकताओं को भी ध्यान में रखा गया है। भीड़ प्रबंधन का अध्ययन भी उतना ही पुराना है जितना कि त्यौहार।

## कार्यप्रणाली एवं दृष्टिकोण

प्रत्येक शोध योजना को आवश्यक संख्या में शर्तों के तहत शोध कार्य के दौरान उठाई गई समस्या का विश्लेषण करने के लिये एक व्यवस्थित दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। कार्यप्रणाली वैध निष्कर्ष पर पहुंचने की एक प्रक्रिया है। वर्तमान कार्य में पद्धतिगत दृष्टिकोण शामिल है।

- (i) नमूनाकरण एवं व्यक्तिगत अवलोकन द्वारा प्राथमिक डेटा संग्रह।



(ii) गाजीपुर में दुर्गा पूजा के दौरान लोगों की भीड़ से द्वितीयक डेटा संग्रह ।

(iii) त्यौहार के दौरान शहर की भीड़ की उचित समझ और अन्तः विषय दृष्टिकोण की आवश्यकता ।

## डेटा विश्लेषण

फील्ड कार्य पूरा होने के बाद उत्सव के दौरान विभिन्न स्रोतों से एकत्र किये गये डेटा की वैधता का मूल्यांकन करने का कार्य किया गया। कुछ अप्रासंगिक डेटा हटा दिया गया। सभी प्रासंगिक डेटा को सारणीबद्ध किया गया और विश्लेषण के लिये उपयुक्त रूप में गणना की गई। डेटा व्यवस्था की निम्नलिखित विधियां लागू की गई हैं -

(i) विवरण के रूप में प्रस्तुति :- शहर की महत्वपूर्ण सांख्यिकीय रिपोर्टों

अध्ययन की आवश्यकताओं के अनुसार विवरण के रूप में तैयार की गई हैं।

(ii) वर्गीकृत बयानों के रूप में प्रस्तुति :- बयानों का विभाजन जन-

सांख्यिकीय पहलुओं, सामाजिक पहलुओं और सांस्कृतिक पहलुओं के आधार पर किया गया है।

(iii) कार्टोग्राफिक प्रस्तुति :- अधिकांश डेटा फोटो या दृष्टि और आरेख

के रूप में प्रस्तुत किया गया है।



## जनपद में भीड़ प्रबंधन

देशभर में सालभर अनेक रैल्वे आयोजन होते हैं जिसमें एक साथ लोगों की व्यापक संख्या एकत्रित होती है। रैल्वे आयोजनों में अनेक कारणों जैसे कि अपर्याप्त व्यवस्था, अफवाह, अचानक कोई संकट आना आदि से भगदड़ मच जाती है। जिसमें बड़े स्तर पर जान-माल की हानि होती है।

ऐसी स्थिति केवल भारत में ही नहीं बल्कि वैश्विक स्तर पर देखने को मिलती है। इस प्रकार से निर्मित आपदाओं को मानव निर्मित आपदाओं में रखा जाता है।

मानव निर्मित आपदाओं में भीड़भाड़ वाले स्थलों पर होने वाले भगदड़ या अन्य आपदाओं से भारत में अनेक व्यक्ति घायल हो जाते हैं और अनेक व्यक्तियों की मृत्यु हो जाती है। अतः इस प्रकार की आपदाओं से बचने के लिये भीड़ प्रबंधन अति आवश्यक है।

वर्तमान अध्ययन में दुर्गा पूजा के दौरान एकत्रित होने वाली भीड़ के प्रबंधन की ध्यान में रखा गया है।



## भीड़ प्रबन्धन हेतु जनपद में जारी दिशा-निर्देश

- (1) जनपद में भीड़ प्रबन्धन हेतु सर्व प्रथम पंडालों और दशहरा मैदानों के आस-पास के क्षेत्रों में यातायात व्यवस्था को विनियमित किया गया।
- (2) पैदल चलने वालों के लिये कार्यक्रम स्थल तक पहुंचने हेतु रूट मैप और आपातकालीन निकास मार्ग आदि का सटीक निर्धारण किया गया कठोर-बद्ध लोगों की आवाजाही सुनिश्चित करने के लिये बैरिकेडिंग का उपयोग बढ़ती हुई भीड़ को नियंत्रित करने के लिये किया गया।
- (3) जनपद में भीड़ प्रबन्धन हेतु हॉट-मॉटे अपराधों के जोखिमों को कम करने के लिये पुलिस की मौजूदगी भी आयोजकों के स्पेण्डे के अन्तर्गत किया गया।
- (4) भगदड़ जैसी स्थितियों में लोगों को निकास मार्गों से परिचित करने, शान्त रहने और निर्देशों के पालन में मदद करने हेतु प्रबन्धन किया गया है।
- (5) पंडाल तथा दशहरा मैदानों में आयोजकों द्वारा बिजली, आग्निशमन यंत्रों का अधिकृत उपयोग किया गया तथा सुरक्षा दिशा-निर्देशों को पुरा करने वाली अन्य व्यवस्थाओं को भी सुनिश्चित किया गया।



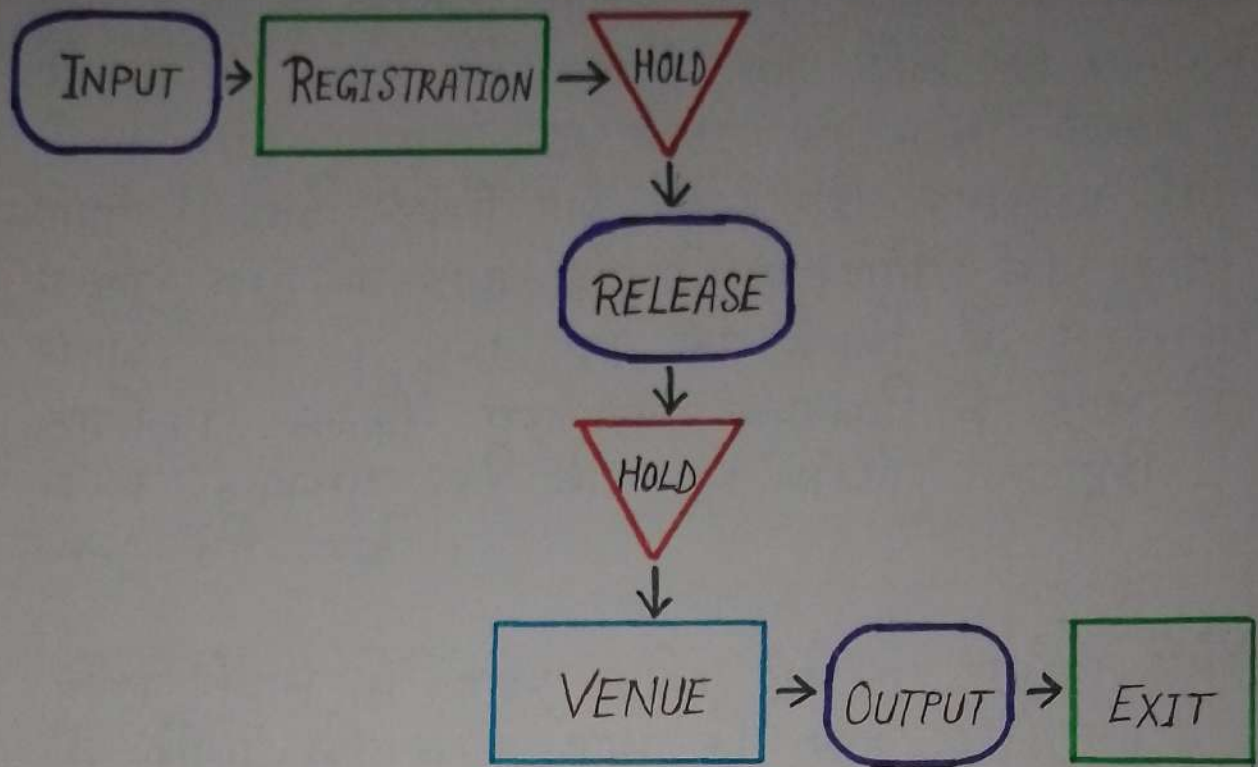
# आयोजन स्थलों पर भगदड़ रोकने की पूर्व तैयारी

(1) जगह का चिन्हांकन :- जिले के ऐसे स्थान जहां पर सबसे ज्यादा लोग रुकप्रित होते हैं उन जगहों का चिन्हांकन किया गया। इसके अतिरिक्त उस स्थान की क्षमता कितनी है, कितने लोग रुकप्रित हो सकते हैं, आवागमन की सुविधा आदि।

(2) लोगों की पहचान :- आयोजन (दशहरा) में बुढ़े, बच्चे, महिला, पुरुष, दिव्यांग आदि लोग रुकप्रित होते हैं। लोगों की पहचान के आधार पर उनकी आवश्यकताओं और व्यवहार की पहचान कर जरूरी व्यवस्था की गयी। दिव्यांग लोगों के निकासी के लिये अलग से व्यवस्था की गयी।

(3) भीड़ नियंत्रण योजना :- जिले के उन स्थानों पर जहाँ पर मेला आयोजित होता है बड़े पैमाने पर लोगों का जन सैलाब उमड़ता है। ऐसी स्थिति में भीड़ को नियंत्रित निम्न प्रकार से किया गया।





## CROWD CONTROL PLAN

### (4) भीड़ भरी जगहों के आस-पास खतरों की पहचान :-

आयोजन में लोगों की भीड़ सामान्य रूप से देखी जा सकती है और ऐसे आयोजनों में भगदड़ के साथ-साथ अन्य खतरे भी उपस्थित रहते हैं, आग्नि दुर्घटना, सड़क दुर्घटना, बम ब्लास्ट, अफवाह, प्राकृतिक आपदा आदि के कारण बड़े स्तर पर जन-धन की हानि हो सकती है। अतः आयोजन स्थल के आस-पास अन्य खतरों की पहचान की गयी एवं उनसे निपटने के लिये आपातकालीन योजना का निर्माण किया गया।



दुर्गा पूजा के दौरान आठिरी दिन गाजीपुर के लंका मैदान में शहर के सबसे बड़े मैले का आयोजन किया गया। यहाँ 60 फीट का रावण जलाया गया। कई स्थानों पर चल रही रामलीला में रावण बध के साथ ही विजयदशमी की खुशी मनाई गई। इस पर्व की तैयारी के मद्देनजर आयोजन स्थलों पर साफ-सफाई के साथ ही अन्य व्यवस्था पर्व की पूर्व संध्या तक पूरी कर ली गई।

लंका मैदान में शहर सहित विभिन्न ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों की आज शाम को भीड़ उमड़ी। इस लम्बे-चौड़े मैदान की स्थिति यह है कि जहाँ भी नज़र पड़ती उधर मेला देखने वाली भीड़ दिखाई देती। शाम को 5-6 बजे तक आलम यह हो गया कि मैदान लोगों से पूरी तरह भर गया। आयोजन स्थलों पर सुरक्षा के पुख्ता इन्तजाम किये गये।

विजयदशमी के दौरान गाजीपुर वाराणसी मार्ग पर लंका मैदान के पास भारी वाहनों का आवागमन प्रतिबंधित कर दिया गया। विजयदशमी पर्व पर शहर में उमड़ने वाली भीड़ के बीच यातायात को नियंत्रित करने के लिये पुलिस प्रशासन की ओर से प्रमुख मार्गों पर रुट डायवर्जन किया गया।

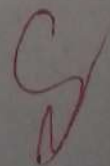


# उपसंहार

वर्तमान विश्व में भीड़ प्रबन्धन सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए, विशेषकर भारत में ।

बड़ी संख्या में विनाशकारी घटनाएं मानवीय प्रुटि के कारण होती हैं, सक्रिय उपायों की योजना बनाकर और उन्हें लागू करके इन आपदाओं से बचा जा सकता है । इसके अलावा पिछली प्रुटियों का विश्लेषण करना व उनसे सबक लेना महत्वपूर्ण है ।

भीड़ आपदा समाज में हर किसी के लिये चिंता का विषय है । नेतृत्व करने में सरकार की जिम्मेदारी के बावजूद भविष्य में ऐसी आपदाओं को रोकने में आम जनता की भी प्रमुख भूमिका होनी चाहिये ।





गाजीपुर शहर में दुर्गा पूजा के दौरान भीड़ प्रबंधन





